बांध और विस्थापन, समस्या एवं समाधान

* गोमतेश्वर पाल

प्रस्तावना

विगत शताब्दी में सर्वाधिक चर्चित और विवादित मुद्दों में एक देश में बड़े बांधों के निर्माण में निहित मानवीय एवं परिस्थितिकीय लागत रहा है। बड़े बांधों ने लाखों लोगों को असाधारण रूप से उनके आवासों से विस्थापित कर दिया है और वनों के विशाल भूभागों को जलमग्न कर दिया है। बांधों के संदर्भ में नियमित रूप से उठाया जाने वाला प्रश्न यह रहा है कि क्या बांधों से होने वाले लाभ उससे होने वाली हानियों से बढ़कर है? क्यों बांधों का निर्माण लाखों लोगों से उनका घर दिलाने की कीमत पर उचित है ? क्या हम विपुल प्राकृतिक वनस्पति वाले विशाल भूखण्डों को खोना सह सकते हैं ? जो कि न सिर्फ विविध प्राणियों के आश्रयस्थल हैं बल्कि उन पर निर्भर लोगों की जीवन रेखा थी। यद्यपि वह बहस कुछ आन्दोलनों के इर्द–गिर्द ही केन्द्रित रही है जिन्होंने बड़े बांधों के निर्माण के विरुद्ध अभियान छेड़ा है। ये आन्दोलन विकास की राजनीति को प्रकाश में लाए हैं, उन्होंने आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और परिस्थितिकीय पुनरूद्धार सम्बन्धी बड़े निर्णायक मुद्दों को उठाने के लिए निर्धारित स्थलों की भूमिका निभाई है।

बांध और विकास

जल ही जीवन है एक प्रसिद्ध लोकोक्ति है। मानव सभ्यता नदियों के किनारे ही विकसित हुई। बांध उतने ही पुराने हैं जितनी कि मानव सभ्यता और उन्हें जल भण्डारण एवं संचालन की प्राचीन तकनीकों में एक माना गया है। विश्व में सबसे पहला बांध लगभग 3000 ई0 पू0 जावानगर, वर्तमान मे जोर्डन स्थित में बनाया गया। पानी एक महत्त्वपूर्ण संसाधन था और इसका इंतजाम महज दैवभोग और किसी अच्छे मानसून पर नहीं छोड़ा जाता था। उपनिवेशवाद ने बहरहाल जल प्रबन्धन की स्थानीय व्यवस्था को

* प्रवक्ता समाजशास्त्र, राजकीय पी0जी0 कालेज, नोएडा

अस्त–व्यस्त कर दिया। उपनिवेशवाद अपने साथ राजस्व निर्धारण की एक कठोर व्यवस्था लेकर आया, जो कि स्थानीय, सामाजिक एवं राजनीतिक गतिकता के प्रति और जलवायकीय उतार चढ़ावों के प्रति सहानुभूति थी। सिंचाई के लिए निर्धारित व्यय में से 90 प्रतिशत पंजाब में स्थित प्रमुख सिंचाई परियोजनाओं पर खर्च किया जाता था। वाणिज्यिक कृषि में यह हित निर्वहन आधारित कृषि की कीमत पर ही साधा जाता था और छोटे किसान कुंओं, कुंडों, छोटी नहरों और बांधों की व्यवस्था से ही सिंचाई का इंतजाम करते थे। अंग्रेजों की नई राजस्व प्रणाली ने भूस्वत्वाधिकारों के साथ जलाधिकार भी प्रदान किए जिससे जल संसाधनों के निजी विनियोग को कानूनी वैधता मिल गयी। जल संसाधन रहित भूमियों के धारकों को लगातार जलाभाव का सामना करना पड़ता था, खासकर खराब मानसून के दौरान। जल और भूमि के निजीकरण ने सिंचाई प्रणालियों के सम्पोषण की स्थानीय व्यवस्था को प्रभावित किया।

बांधों और विशेष रूप से बड़े बांधों ने 19वीं और 20वीं शताब्दी में लोकप्रियता हासिल कर ली। ऐसे बांध दो महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं जो उन्हें आधुनिक संसार में तथाकथित रूप से अपरिहार्य' बना देते हैं। एक वे नद्य अथवा सतही जल का भण्डारण करते हैं ताकि जल हेतु मांग और उसकी उपलब्धता में असामंजस्य को दूर किया जा सके। दो, बांध में उठान पर संग्रहीत जल और ढाल पर नदी के बीच अन्तरीय ऊँचाई जलशक्ति पैदा करते हैं और बिजली उत्पन्न करते हैं। बांध इस प्रकार न सिर्फ औद्योगिक इकाईयों व करों को बिजली प्रदान करता है, अपितु कृषि, उद्योगों और व्यापक उपभोग के लिए जल की आपूर्ति भी करता है। नदियां ही विद्युत ऊर्जा उत्पादन हेतु अब तक अप्रयुक्त संसाधन थे। 19वीं शताब्दी में अपने विस्तीर्ण होते शहरों के लिए ब्रिटेन ने अपने यहाँ लगभग 200 बांध बनवाये। 1900 के प्रथम दशक में बने बांध मिट्टी के तटबंधन होते थे और सफल होने तक बांधकर प्रयोग के आधार पर बनाये जाते थे। विश्व में इस काल में बने अनेक बांध ध्वस्त हो गए। बाढ़ का पानी रोकने के लिए बड़े बांधों के

प्रयोग ने यह काम घाटों और नहरों से किए जाने की परम्परागत प्रणाली को निरर्थक कर दिया। जल वैज्ञानिक, आर्थिक योजनाकारों द्वारा दिखाए गए उत्साह के प्रति आशंकित थे और उनकी यह शंका निर्मूल सिद्ध नहीं हुई। हजारों बांध टूट गए और अस्तव्यस्तता की स्थिति पैदा हो गई, जिसने विश्व में ज्ञान भीषणतम अकालों में से एक की ओर प्रवृत्त किया। बड़े बांधों के विरुद्ध तर्क–

अर्थव्यवस्था, समाज, पारिस्थितिकी और पर्यावरण पर बांधों के प्रभाव विषयक अनेक तर्क वितर्क किए जाते हैं। ये वाद विवाद बड़े बांधों के पक्ष में और उनके विरुद्ध अनेक विचार द्रष्टव्य हैं–

प्रतिरोध और विस्थापन

बड़े बांधों ने समर्थन के स्थान पर विरोध को अधिक उत्पन्न किया है। 1946 में हीराकुण्ड बांध के निर्माण की पहचान रही– तीस हजार लोग, जिनमें शामिल थे स्थानीय राजनेतागण, अधिकारी वर्ग और वे लोग जो बांध स्थल से निष्कासित होकर सड़क पर आ जाने वाले थे। हीराकुण्ड इस अर्थ में देश के अन्य भागों में बांधों के विरुद्ध विरोध प्रदर्शनों के अग्रदूत के रूप में सामने आया। जबकि यह विरोध प्रदर्शन विशिष्ठ परियोजनाओं पर ही केन्द्रित होते थे, फिर भी बांधों के पक्ष में और विशेष रूप से विरोध में उठाए जाने वाले तर्क सर्वसामान्य ही रहे हैं। नव गणित झारखण्ड जनजातीय राज्य में, जब तक तेरह बड़ी सिंचाई परियोजनाएँ 108 मध्यम सिंचाई परियोजनाएँ और 6820 लघु जल परियोजनाएँ शुरू की जा चुकी हैं। इनमें से अधिकांश विफल ही रही हैं। वह अभियान जिसने विश्व का ध्यान बड़े बांध निर्माण की राजनीति और पर्यावरण पर उसके हानिकारक प्रभाव की ओर खींचा, वो था 'नर्मदा बचाओ आन्दोलन' अर्थात् नर्मदा नदी की रक्षा हेतु आन्दोलन। नर्मदा भारत के तीन राज्यों से होकर बहती हैं, मध्यदेश, महाराष्ट्र और गुजरात। एक पावन नदी के रूप में पूजी जाने वाली नर्मदा हजारों ग्रामवासियों की जीवन रेखा है और उसका महत्त्व इस भू–भाग की लोक परम्पराओं में परिलक्षित होता है। योजनाकारों ने नर्मदा बचाओ

आन्दोलन के अनुसार इस परियोजना को हाथ में लिए जाने के पारिस्थितिकीय मानवीय एवं वित्तीय महत्त्वों परिणामों का आलोचनात्मक और यथार्थपरक मूल्यांकन नहीं किया था।

पारिस्थितिकीय प्रभाव

बड़े बांधों का सर्वाधिक प्रत्यक्ष पारिस्थितिकीय प्रभाव वनों के विशाल विस्तार दलदली भूमियों और वन्य जीवन का स्थायी विनाश है। बांध से समृद्ध वनावरण के विशाल भू–भाग जलमग्न हो जाते हैं। ये वन अनेक पशुओं के प्रवास गमनपथ हैं, दलदली भूमि विभिन्न प्रवासी पक्षियों को आकर्षित करती है, जबकि नदी प्रवासी मछलियों हेतु एक माध्यम है। पशुओं, पक्षियों एवं मछलियों के प्रवास मार्गों का विध्वंस न सिर्फ परितंत्र को प्रभावित करता है बल्कि स्थानीय लोगों के जीवन को भी प्रभावित करता है। मछली स्थानीय लोगों के प्रमुख आहार का एक अभिन्न हिस्सा है, तटबंधन जल के ढाल पर उनकी गति को अवरुद्ध कर देता है, साथ ही उनके प्रजनन चक्र में भी बाधा डालता है। विशाल जलराशि को धारणकर जलाशय जल वाष्पीकरण की ऊँची दर को बढ़ावा देता है। यह जल की लवणता में वृद्धि की ओर प्रवृत्त करता है, जिसका जल गुणवत्ता पर दीर्घकालीन प्रभाव पड़ता है।

मनुष्य पर पड़ने वाला प्रभाव

बांध परियोजनाओं के सबसे स्पष्ट और प्रत्यक्ष अकारण परिणामों में एक अपने वासस्थानों से लोगों का विस्थापन है। इसका अर्थ है कि सिर्फ बांध स्थलों में और उनके आसपास रहने वाले लोगों को अपने खाली करने व अन्यत्र कहीं बस जाने को कहा जाता है, अपितु उनसे यह भी उम्मीद की जाती है कि वे अपनी जमीन छोड़ दें, अपने घर छोड़ दें जहाँ अपना सारा जीवन बिताया हो और उस परिवेश को भी छोड़ दें, जिससे परिचित रहे हो, ताकि बेनाम लाभग्राहियों के लिए बांध बनाया जा सके। लोगों की संख्या जिन्हें बांध परियोजनाएँ विस्थापित कर देती हैं, के अलावा यह भी ध्यान देने योग्य है कि विस्थापित लोगों में अधिकांश जनजातियों से सम्बन्ध रखते हैं य

फिर उस ग्रामीण गरीब वर्ग का हिस्सा होते हैं जिसके पास नाममात्र को या फिर बिल्कुल भूमि नहीं होती है।

वित्तीय प्रभाव

बांधों के लिए विपुल वित्तीय निवेश आवश्यक होते हैं, जो कि इसके आलोचकों के अनुसार अब तक के सबसे अधिक अलाभकर निवेश रहे हैं। अधिकारिक अनुमानों (1987–88) के अनुसार सरदार सरोवर बांध की कुल अन्तिम लागत रु0 11.154 करोड़ है और इस अनुमान में अन्य बातों के अलावा उन आठ वर्षों के दौरान जिनमें यह परियोजना पूरी होती है। अन्य विकास प्रतिबद्धताओं के साथ–साथ स्वास्थ्य रक्षा, शिक्षा एवं रोजगार प्रदान करने सम्बन्धी कल्याणकारी उत्तरदायित्वों के विषय में उसका क्या कहना है। बड़ी बांध परियोजनाओं को विश्वबैंक द्वारा 10.75 प्रतिशत प्रतिवर्ष की ब्याजदर से वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

बड़े बांधों के पक्ष में तर्क

बड़े बांधों का इस आधार पर समर्थन किया गया है कि सिंचाई, पेयजल और बिजली संकट से निपटने के लिए विकल्पों में यह सर्वोत्तम विकल्प है। आणविक ऊर्जा को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। सौरऊर्जा में उचित प्रौद्योगिकी के अभाव में संदेह की दृष्टि देखा जाता है। जल विद्युत ही एक मात्र विकल्प बचता है। यह माना जाता है कि भारत में आत्मनिर्भरता सिंचाई सुविधाओं, उन्नत बीजों, जोतों का आकार बढ़ा, उर्वरकों से आयी है। पोखरों के अध्ययन में उन्हें अलाभकर समझा जाता है। ये पोखरों में वर्ष भर जल भी नहीं रहता है। जबकि जल की सबसे अधिक आवश्यकता रहती है। ये बड़े बांध ही थे जो सूखे के समय गुजरात के लिए कारगर सिद्ध हुए।

बांध एवं विस्थापन : मानव एवं मूल्य

पुर्नवास के मामलों में सरकार के सामने विस्थापिता को बसाने के लिए जमीन तलाशने की समस्या रही है। उन्हें जमींन बांटने के लिए वनों को साफ किया गया। महाराष्ट्र के नन्दूर वाड जिले में बसाने के बाद उन्हें पंजीकृत कागज ही नहीं मिला जहाँ बसाया गया है। जनजातियाँ अपने

भरण–पोषण के लिए जंगलों पर ही निर्भर रही है। वन ही उनकी जीवन रेखा है। वनों से उन्हें मौसमी मंदी में गुजारा मिलता है। फलों, जड़ी बूटियों, हरी पत्तियों और शिकार आदि से ही काम चलाना पड़ता है। जनजातियों के बीच तनाव का एक कारण यह भी है। ये ही लोग समाज में हाशियों पर रहने वाले होते हैं। ये सदियों से वनों में स्थायी रूप से रहते हैं, सभ्यता के हाशिये पर रह रहे हैं, विकास योजनाओं का विरले ही लाभ उन्हें मिला है।

विस्थापित लोगों पर हावी होने का एक मात्र कारण आर्थिक है। आर्थिक मुद्दों को जीवन का विषय माना जाता है। जबकि इनकी संस्कृति को गौण समझा जाता है।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि– अकाल एवं सूखा सदा ही मानव सभ्यता का ध्यान अपनी ओर खींचते रहे हैं। इस समस्या ने विकराल रूप ग्रहण कर लिया है। बांध एवं विस्थापन में सबसे ज्यादा जनजातियाँ, गरीब किसान एवं भूमिहीन लोग की रही हैं।

सन्दर्भ –

1. आऊटलुक
2. लोकायन बुलेटिन
3. माथुर मार्सडन
4. पैट्रिक मैक्यूली
5. योजना।